International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 927-928

माध्यमिक शिक्षकों के कार्यक्रम के कार्यमूल्यों का अध्ययन

मीनू रानी
सहायक प्रोफेसर, एल. एन. टी. शिक्षा महाविद्यालय, पानीपत, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

शिक्षा तथा मानव जाति का जन्म–जन्मान्तर का संबंध है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ मानव जाति को प्रगतिशील, सुसंस्कृत एवम् सभ्य बनाना है। यह व्यक्ति तथा समाज की वृद्धि के लिए बहुत महत्वपूर्ण है शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपनी विचार शान्ति तथा तर्क शक्ति समस्या समाधान तथा बौद्धिकता, प्रतिभा तथा रूझान, भावुकता तथा कुशलता और अच्छे कार्यो तथा रूचियों को विकसित करता है। स्पष्ट है कि शिक्षा व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए ही अत्यन्त महत्वपूर्ण एवम् आवश्यक है। सारांश रूप में शिक्षा को निम्न शब्दों द्वारा परिभाषित किया जा सकता हैः–

''शिक्षा मानव व्यवहार का परिशोधन है।''

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने के लिए अनेक प्रयास किए गए है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) तथा शिक्षा आयोग (1964–65) की रिपोर्ट ने इसमें सुधार की नींव डाली। यद्यपि पहले आयोग ने एक वर्ष की विद्यालयी शिक्षा का सुझाव दिया परन्तु आयोग ने सभी पक्षों को ध्यान में रखकर देश के विकास के लिए 10̣23 पद्धति का सुझाव दिया। इसे संसद में एक प्रस्ताव द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 के अंतगर्त मान लिया गया । राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवम् प्रशिक्षण परिषद् (छण्ब्म्त्ज्) ने 1975 में विद्यालय शिक्षा पाठ्यक्रम का एक प्रारूप बनाया और इस प्रकार शिक्षा आयोग एवम् राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सुझावों को यथार्थ रूप दिया तब से सभी राज्यों ने इस शिक्षा पद्धति को मान लिया गया । परिषद् ने 1988 में मानव संसाधन के विकास हेड पाठ्सक्रम मे सुधार किया ताकि देश की समस्याओं का सही ढंग से सामना किया जा सके।

शिक्षा का स्वरूप

शिक्षा का स्वरूप लम्बी समयावधि में उभरा है। इसके कई स्तर है जैसे :

स्तर	कक्षा
प्राथमिक	(1 से 5 तक)
माध्यमिक	(6 से 8 तक)
उच्च माध्यमिक	(9 से 10 तक)
वरिष्ठ माध्यमिक	(11 से 12 तक)

उच्च/उच्चतर माध्यमिक स्तर

उच्चतर माध्यमिक स्तर विद्यालय शिक्षा में एक महत्वपूर्ण स्तर है मानव विकास की विभिन्न अवस्थाओं में किशोरवस्था सर्वाधिक नाजुक अवस्था है।

अक्तूबर 1952 में भारत सरकार ने माध्यमिक शिक्षा में सुधार लाने के लिए मद्रास विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा. ए.एल. मुदालियर की अध्यक्षता में 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' स्थपित किया जिसे मुदालियर कमीशन के नाम से जाना जाता है। इस कमीशन ने अपने सुझावों को देते हुए सरकार का ध्यान इस बात की और आकर्षित किया माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार तब तक संभव नहीं हो सकेगा जब तक माध्यमिक शिक्षा में कार्यरत अध्यापपकों की सेवा शर्तों में सुधार नहीं करते।

''माध्यमिक शिक्षा आयोग'' के 12 वर्ष पश्चात सन् 1964 में शिक्षा के सभी तत्वों पर नवीन आवश्यकताओं के अनुसार विचार करने के लिए एक शिक्षा आयोग का गठन किया गया। डा0 दौलत सिंह कोठरी इसके अध्ययन थे। रिपोर्ट के अध्यान 4 में इस कमीशन ने स्पष्ट शब्दों में इस बात को स्वीकार किया कि ''इसमें कोई संदेह नहीं कि शिक्षा के स्तर व राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के आयोग को जितनी भी बातें प्रभावित करती है उनमें शिक्षकों के गुण, क्षमा व चरित्र सबसे महत्वपूर्ण है।''

शिक्षा एक गतिशील विषय है राष्ट्र व विश्व की बदलती हुई परिस्थितियों व आवश्यकताओं के अनुसार इस पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता बनी रहती है यद्यपि कोठारी आयोग का परिपत्र एक क्रान्तिकारी दस्तावेज है क्योकि इसमें देशव्यापी शिक्षा प्रणाली का विस्तृत, आलोचनात्मक एवम् रचनात्मक अवलोकन किया गया है परन्तु बदलती हुई परिस्थितियों की मांग के अनुसार 1986 की ''नई शिक्षा नीति'' में अध्यापकों की समस्याओं को सुलझाने पर बल दिया गया है।

शिक्षा में अध्यापक की भूमिका

''यदि आप एक अध्यापक को अनदेखा करते है तो आप एक छात्र को अनदेखा करते हो, और यदि आप एक छात्र को अनदेखा करते हो, तो आप उस छात्र से संबन्धित देश के भविष्य को अनदेखा कर रहे हो''

–प्रो0 हुमायुं कबीर (1951)

शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक का विशेष महत्व है अच्छा शिक्षक अपने व्यक्तित्व से बालक को प्रभावित करता है। यह बालकों की स्वतंत्रता प्रगति की ओर उनके व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास में सहायता करता है। वह बालकों को सत्य की ओर बढ़ने तथा उनकी प्राप्ति के लिए अपने व्यक्तित्व का विकास करने की प्रेरणा एवम् क्षमता प्रदान करता है। वह अपने अस्तित्व को उनके ऊपर थोप कर अपना अनुयायी या दास नहीं बनाता। बालक स्वभाव से ही अपने शिक्षक का अनुकरण करता है यदि शिक्षक अच्छे चरित्र वाला होगा तो विद्यार्थी में अच्छे गुण स्वयं ही आ जायेगें। अतः शिक्षक को चरित्रवान होना चाहिए। शिक्षक को सच्चरित्र होने के साथ–2 अपने विषय एवम् बच्चों के स्तर का पूर्ण तथा अन्य विषयों का सामान्य ज्ञान होना चाहिए इसके साथ उन्हें प्रशिक्षण की आधुनिकता विधियों का भी ज्ञान होना चाहिए।

किसी ने ठीक ही कहा कि हमें शिक्षक इसलिए याद नहीं आते कि उन्होंने हमे किसी विषय विशेष की शिक्षा दी थी बल्कि वे हमें इसलिए याद आते है कि उन्होने हमें किसी विषय विशेष की शिक्षा दी थी, बल्कि वे हमें इसलिए याद आते है कि उन्होंने हमें उचित दिशा में विकास करने के लिए प्रेरणा प्रदान की थी।

राल्फ हारपर के अनुसार

''अध्यापक कार्य शक्ति तथा चरित्र की शुद्धता पैदा करना है न कि धन, शरीर और ज्ञान की पूर्णता और अनुभूति की सूक्ष्मता पैदा करना''।

फ्रोबेल के अनुसार

''विद्यालय रूपी बाग में अध्यापक रूपी माली विद्यार्थी रूपी पौधों के विकास में सहयोग देते हैं''।

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों की समस्याएं

आज का युग विज्ञान और तकनीकी का युग है। इसमें अध्यापक को शिक्षण सम्बन्धी क्रियाओं को सुचारू रूप से चलाने में अनेक जटिलताओं का सामना करना पड़ता है इन जटिलताओं को भलि–भांति परिभाषित न किए जाने के फलस्वरूप अध्यापकों को अपने उतरदायित्वों का ठीक प्रकार से पालन करने में कठिनाईयां आती है। आज उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की समस्याओं की तरफ कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है। फलस्वरूप ये अपने उतरदायित्वों को निभाने में असमर्थ से हो रहें हैं। विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की समस्याओं का अध्ययन किया गया है। ये समस्याएं निम्न हैः–

विद्यालयी समस्याएं

प्राचीन काल में शिक्षा का क्षेत्र संकुचित होता था उस समय बालक को केवल एक विषय या कौशल में ही निपुण बनाया जाता था। परन्तु आज शिक्षा का क्षेत्र बहुत वयापक हो गया है। आज बच्चें को आंतरिंक व बाह्य दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती है। जिससे बच्चे का सर्वागींण विकास हो सके।

व्यक्तिगण समस्याएं

मनुष्य स्वभाव से ही संवेदनशील प्राणी रहा है और ये संवेदनाएं उसके कार्यों पर अपना सीधा प्रभाव डालती है। कई बार विद्यालय के कक्षा–कक्ष में इसका साधरण सा रूप देखने को मिलता है तथा मानसिक उद्वेलना के कारण अध्यापक बिना किसी गलती के भी छात्रों पर बिगड़ने लगता है घर के मामलों की बजह से उत्पन्न तनाव इन्हें विद्यालय की परिस्थितियों में सांमजस्य सथपित करने में अड़चन पैदा करता है।

आर्थिक समस्याएं

वर्तमान समय की बढ़ती हुई महँगाई, बढ़ती फीसें, किरायें आदि के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। जनसाधारण पर ये आर्थिक समस्याएं सीधा प्रभाव डालती है। अध्यापक भी इस समस्या के कारण अपने उतरदायित्वों को सही ढंग से नहीं निभा पाता अतः इन समस्याओं को समझना और उनका निवारण करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

संसाधन संबंधी समस्याएं

किसी भी देश का विकास उस देश की शिक्षा प्रणाली एवम् संसाधनों पर आधारित होता है संसाधन दो प्रकार के होते है (1) प्राकृतिक (2) मानवीय संसाधन। प्राकृतिक संसाधना को सही उपयोग तभी संभव है जब मानव इन संसाधनों का उत्तम प्रयोग करने में सक्षम हो।

प्रशासकीय समस्याए

किसी भी देश का प्रशासकीय ढांचा सही होना आवश्यक है यदि प्रशासन में समस्या है तो पूरे देश की कार्यप्रणाली बिगड़ जाती है।

शैक्षिक समस्याएं

आज अध्यापक को शैक्षिक लक्ष्यों की पूर्ति में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जैसे– अनुशासन की समस्या, प्रत्येक कक्षा के लिए अलग–2 अध्यापक न होना, पाठ्यक्रम में बार–2 परिवर्तन होना इत्यादि ।

निष्कर्ष

जब तक अध्यापक की विशेष शर्तो व नियमों का निराकरण नहीं होगा तब तक शैक्षिक समस्याओं से निजात नहीं पाया जा सकता। ये शर्ते है :–

1. वेतन और भत्ते
2. सेवा निवृति और वृद्धावस्था के लाभ और चिकित्सा सुविधाएं ।
3. आवास
4. अध्ययन अवकाश
5. महिला अध्यापकों के लिए विशेष प्रावधान
6. सेवा शर्तो में एकरूपता
7. शिक्षकों की नियुक्तियां एवं स्थानान्तरण
8. शिक्षकों के कल्याण के लिए राष्ट्रीय प्रतिष्ठान।

इन शर्तो के अभाव के कारण अध्यापकों को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जो उसकी शैक्षिक गतिविधियों में बाधाएं उत्पन्न करती है।

सन्दर्भ

1. नायर (1971) हिसार जिले के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सामाजिक, आर्थिक एवम् पारिवारिक स्थिति का अध्ययन, शिक्षा विभाग, जींद विश्वविद्यालय ।
2. एन.सी.ई.आर.टी. (1971) शिक्षण व्यवसाय के प्रति अध्यापकों की प्रतिक्रिया का अध्ययन, प्रद्त प्रक्रिया निरीक्षण यूनिट, आई.एन.ई, नई दिल्ली ।
3. चौहान, एम.ए. (1974) जोनापुर नगर के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की वित्तिय और सामाजिक समस्याओं का अध्ययन।
4. भटनागर डा. ए.वी. (2004) अधिगमकर्ता का विकास उवम् शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मेरठ सूर्या पब्लिकेशन ।
5. नेहरा (2010) भिवानी जिले के सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों की समस्याओं का अध्ययन एम.एड. डिजर्टेशन जीन्द विश्वविद्यालय, जीन्द।